APRIL TO JUNE 2014-15

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

बोडला विकासखंड के ग्राम परसहा मे दिनांक 26.03.2014 को कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दलहन फसलों के लिए जागरुकता कार्यकम का आयोजन किया गया। इस कार्यकम में कृषको को दलहन की मुख्य फसल जैसे अरहर की आवश्यकता एवं महत्ता के बारे मे जानकारी दी गई एवं साथ ही साथ दलहन फसलों का रकबा एवं उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषको को जागरुक किया गया ।इस कार्यकम में कृषि विज्ञान केन्द के वैज्ञानिको द्वारा अरहर की उन्नत किस्म, उर्वरक प्रबंधन एवं रोग प्रबंधन के बारे मे विस्तृत जानकारी दी गई इस कार्यकम में 100 से अधिक कृषको ने भाग लिया ।

ICAR के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

डॉ. अनिल दीक्षित (वरिष्ठ वैज्ञानिक) एवं डॉ. वी.के. चौधरी NIBSM (ICAR) रायपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं कृषकों के प्रक्षेत्र में भ्रमण किया एवं केन्द्र की गतिविधियों के बारे में जानकारी ली।

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	गेहूं	एच -आई 14-18	सोयाबीन चना फसल चक्र	02	04
2.	चना	वैभव	चने में समन्वित कीट प्रबंधन	2.5	05
3.	मुर्गी	वनराजा ग्रामप्रिया	बैकयार्ड कुक्कुट पालन पर ग्रामप्रिया एवं वनराजा प्रजाति की मुर्गियों का तुलनात्मक आकलन	30 नग /किसान	04
4.	बैंगन	पुसा परपल लांग	बैंगन के तना एवं फल भेदक इल्लियों के नियंत्रण हेतु विधि का आकलन	02	07
योग				6.5	20

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	चना	वैभव	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	टमाटर	एस-22	उन्नत किस्म काप्रदर्शन	05	05
3.	मछली	रोहू,कतला,मृगल	मछली सह बत्तख पालन	0.4	04
4.	मछली	रोहू,कतला,मृगल	मिश्रित मछली पालन	05	04
5.	गन्ना	सी.ओ - 86032	गन्ने में लाल सड़न रोग का प्रबंधन	12	12
6.	गेहूं	जी.डब्लू-273	गेहूं में खरपतवार प्रबंधन	12	12
7.	मशरूम	आयस्टर मशरूम	मशरूम उत्पादन तकनीक	-	05
8.	अजोला	अजोला पिन्नाटा	अजोला उत्पादन तकनीक एवं पशु आहार के रूप में उपयोग	टैंक 9x6फिट	08
योग				46.4	64

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)
1.	चना	वैभव	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	80
2.	मटर	विकास	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20
योग				100

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	लाभार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	80
2.	पौध संरक्षण	4	1	85
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मात्स्यकी	4	1	82
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	586

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	10	20
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	220	220
प्रक्षेत्र दिवस	03	300
ट्राइकोडर्मा पर प्रशिक्षण	03	60
पशुस्वास्थ्य शिविर	01	100
योग	237	700

बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	चना	वैभव	प्रमाणित	15
2.	चना	जे.जी-226	प्रमाणित	15
योग				30

उन्नत कृषि

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

समृद्ध किसान

अंक-17 त्रैमासिक पत्रिका, अप्रैल मई जून 2014 वर्ष-7

संपादक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ. जे.एस.उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
आंच. परियोजना निदेशक जोन -7 (भा.कृ.अनु.प.) जबलपुर

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. टी.डी.साहू
कार्यक्रम समन्वयक कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा जिला कबीरधाम (छ.ग.)

संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन

सह संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
पौध रोग विज्ञान

श्रीमती सुलोचना भुइंया
मात्स्यकी

श्रीमती प्रमिला कांत
उद्यानिकी

इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी

श्री बी.एस. परिहार
प्रक्षेत्र प्रबंधक

श्री वाई.के कौशिक
तकनीकि सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा ग्राम – बड़ौदा खुर्द विकासखंड स. लोहारा में आदिवासी उपयोजनांतर्गत दिनांक 04.03.2014 को वृहत प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। ग्राम बड़ौदा खुर्द में 35 एकड़ में चना प्रजाति वैभव का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का कार्यकम लिया गया जिसका मुख्य उद्देश्य जिले में उन्नत प्रजाति के बीज की जानकारी के साथ – साथ उत्पादन को बढ़ावा देना था। इस कार्यकम के अवसर पर कार्यकम समन्वयक डॉ. टी.डी. साहू ने किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र, की गतिविधियां एवं चना में उर्वरक प्रबंधन एवं डॉ. बी.पी. त्रिपाठी नें चने की मुख्य बीमारी उकठा, कालर राट, ड्राई रूट राट के बारें में कृषकों को अवगत कराया। इस प्रक्षेत्र दिवस में कुल 100 किसानो ने भाग लिया।

कृषि स्वावलंबन पर युवाओ को प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द के प्रशिक्षण हाल में दिनांक 6.03.2014 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें जिले के चारो विकास खंडो से कुल 30 ग्रामीण युवकों एवं महिलाओं को जैव फंफूदनाशक (ट्राइकोडर्मा) उत्पादन विधि पर तकनीकी एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण डॉ. के. पी. वर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक तिलहन, पौध रोग विभाग, कृषि महाविद्यालय, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर एवं डॉ.बी. पी. त्रिपाठी, पौध रोग विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र,कवर्धा द्वारा दिया गया।

पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा एव पशुपालन विभाग कवर्धा के संयुक्त तत्वाधान में वि.खं. कवर्धा के ग्राम – मड़मड़ा में दिनांक 25.03.2014 को पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यकम में ग्राम मड़मड़ा के 40 कृषकों ने भाग लिया एवं पशुओं के स्वास्थ्य की जानकारी ली। इस शिविर में 45 पशुओं का इलाज किया गया।

APRIL TO JUNE 2014-15

आगामी तीन माह के प्रस्तावित कार्यक्रम

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	महामाया /स्वर्णा	समन्वित प्रबंधन द्वारा धान में झुलसा रोग के नियंत्रण का आकलन	02	04
2.	धान	करमा मासुरी	छिटकवा विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु कम बीज दर एवं अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशी के प्रभाव का आकलन	04	08
3.	सोयाबीन	जे.एस. 95-60	सोयाबीन आधारित फसल पद्धति का आकलन	03	06
योग				09	18

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	स्वर्णा	झुलसा रोग नियंत्रण हेतु रासायनिक दवाई(फोलीक्योर) का प्रदर्शन	12	12
2.	धान	करमा मासुरी	धान की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
3.	सोयाबीन	जे.एस. 95-60	सोयाबीन की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				36	36

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वालीतकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	उड़द	टी.ए.यू-1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				24	24

बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	सोयाबीन	जे.एस.335	प्रमाणित	17.3
2.	मूंग	एच.यू.एम16	प्रजनक	5.2
योग				22.5

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

कृषकों एवं कृषि महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	85
2.	पौध संरक्षण	4	1	87
3.	उद्यानिकी	4	1	82
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	86
6.	मत्स्यकी	4	1	85
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	593

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	10	20
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	15	15
योग	25	35

[illegible]

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

सामयिक सलाह -2014 क्या करें.....? कब करें.....? क्यों करें.....?

अप्रैल माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- ग्रीष्मकालीन मक्का की बुवाई के समय दीमक प्रभावित क्षेत्रों में खेतों को क्लोरोपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण की 25 कि. प्रति हेक्टेयर की दर से उपचारित करें।
- गन्ने की पेढ़ी फसल में तनाबेधक के प्रकोप होने पर फोरेट 10 जी दानेदार का 10 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- गन्ने की शीतकालीन फसल में नत्रजन की शेष मात्रा का छिड़काव करें एवं मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें)

उद्यानिकी

- भुट्टे के लिए मक्के की बुवाई करें।
- आलू, प्याज, लहसुन आदि सब्जियों की खुदाई एवं भण्डारण करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में उर्वरक एवं पौध संरक्षण के उपाय करें।
- टमाटर, मिर्च, बैंगन, भिण्डी तथा बरबट्टी आदि सब्जियों के बीज तैयार करने का उचित समय है।
- आम नीबूवर्गीय एवं अन्य फलों में सिंचाई प्रबंधन करें।
- फल पौधों मे लू से सुरक्षा के उपाय करें।
- बेर एवं खिरनी का स्क्वैश, बेल का मुरब्बा, कैथा का जैम व जेली, मिर्च का अचार तथा आलू व सब्जियों को सुखने का कार्य करें।
- क्यारियों में भूमि उपचार करें।
- शरदकालीन मौसमी पुष्पों के बीज एकत्रित करें।

पशुपालन

- चारे की फसल मक्का, ज्वार, नेपियर की बुवाई करें।
- खुरपका मुँहपका रोग से बचाव हेतु टीका लगवाये ।
- नवजात बछड़े – बछड़ियों को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- अधिक आय के लिए स्वच्छ दुग्ध उत्पादन करें।

मई माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- इस माह खरीफ फसलों की तैयारी हेतु खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- पानी की सुविधा उपलब्ध हो तो हरी खाद हेतु सनई व ढेंचा को लगायें।
- खरीफ में जिन फसलों की बुआई करना हो उनकी उन्नत किस्म के प्रमाणित बीज की व्यवस्था जरुर कर लेवें।
- गन्ना में मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- वर्षा ऋतु मे पौधे रोपण हेतु गढ्ढे तैयार करें।
- सिंचाई एवं निकास नालियों की मरम्मत करें।
- खड़ी फसल में पौध संरक्षण के उपाय करें।
- गेंहू के बीजों को सूर्य ताप द्वारा उपचारित कर भण्डारण करें। इस हेतु बीजों में 10 प्रतिशत तक नमी पर्याप्त होती है।

उद्यानिकी

- गर्मी में पकने वाले फल जैसे आम,फालसा, बेल, कैथा, एवं खिरनी इत्यादि की तुड़ाई करें।
- हल्दी, घुइयां, अदरक हेतु खेत की तैयारी करें एवं बुआई करें।
- वर्षाकालीन सब्जियों की बुआई हेतु तैयारी करें।
- मौसमी पुष्पों के बीज की बुआई करें।
- वर्षा ऋतु हेतु क्यारियों का रेखांकन करें।
- आम, बेल, अनन्नास, बेर का मुरब्बा, चटनी, अचार एवं सब्जियों को सुखाने का कार्य न करें।
- फसलों मे दीमक तथा अन्य भूमिगत कीटों से नियंत्रण हेतु क्लोरोपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण को 20–25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलावें तथा गुड़ाई करें अथवा क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. का 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

पशुपालन

- गलघोटु तथा लँगड़ी बुखार का टीका सभी पशुओ मे लगवाये ।
- पशुओ को हरा चारा पर्याप्त मात्रा मे खिलाये।
- पशुओ को लु एव गर्मी से बचाने की व्यवस्था करे ।
- पशुओ को स्वच्छ पानी पिलवाये ।

जून माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- सोयाबीन एवं अरहर के लिए जमीन की तैयारी कर बुवाई करें।
- धान के पुष्ट बीजों का चयन 17 प्रतिशत नमक के घोल द्वारा करें तथा पुष्ट बीजों को साफ पानी से धोकर साफ पाउडर (2 ग्राम/किलो बीज) कवकनाशी से उपचारित कर बुवाई करें।
- धान की कतार बोनी तथा खुर्रा बोनी करें।
- गन्ने में मिट्टी चढ़ाने का कार्य सम्पन्न करें।
- ग्रीष्मकालीन जुताई, जल निकास नालियों का सुधार एवं वर्षा हो जाने पर सिंचाई हेतु बने नालों को समतल करें।
- खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें। एक सप्ताह खुला रहने देने से रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव, कीड़ो के अण्डे, प्यूपा तथा खरपतवारों के बीज नष्ट हो जाते है।
- मेढ़ों पर उगे हुए पौधों को जलाकर नष्ट कर दें, जिससे कीड़े तथा रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव तथा खरपतवार बीजसहित नष्ट हो जाते है।

उद्यानिकी

- सब्जियों की पौधशाला हेतु क्यारी निर्माण, भूमि उपचार एवं क्यारी में बीजों की बुआई करें।
- बरसात की फसल हेतु कद्दूवर्गीय सब्जियों के बीजों की बुआई करें।अचार, चटनी, अमावट आदि तैयार करें।
- मशरुम का नया बीज (स्पान) तैयार करके रख लें। आयस्टर मशरुम तथा पैरा मशरुम दोनों का स्पान बना सकते है। इसके लिये गेहूं या ज्वार के दानों का उपयोग करें।
- फलदार वृक्षों की सूखी शाखाएं काट दे तथा कटे स्थान पर चौबटिया पेस्ट का लेप कर दें।
- मशरुम उत्पादन गृह या सीन की मरम्मत कर ले तथा सतह पर रेत बिछा दें। यदि पहले से रेत बिछी हो तो उसे पलटकर उसमें फार्मलिन (5 भाग + 100 भाग पानी) का छिड़काव कर दें। तीन दिनों तक गृह को बन्द रखें तथा फिर खोल दें।
- फलदार वृक्षों, सजावटी पेड़–पौधों आदि के तनों पर बोर्डो पेस्ट का लेप करें।
- उच्चहन भूमियों में यदि दीमक का प्रकोप हो तो अंतिम जुताई के पूर्व क्लोरोपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण को मिट्टी में 25 कि. हेक्टेयर की दर से मिला दें।

पशुपालन

- गलघोटु तथा लँगड़ी बुखार का टीका शेष सभी पशुओ मे लगवाये ।
- परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- खरीफ के चारे, लोबिया के लिए खेत की तैयारी करे ।